पाठ्यक्रम के उद्देश्य
(Objective of Curriculum)

शिक्षा की प्रक्रिया के तीन प्रमुख घटक होते हैं—

(1) शिक्षक, (2) शिक्षार्थी तथा (3) पाठ्यक्रम। शिक्षण में शिक्षक तथा छात्र के अन्त:क्रिया (Interaction) पाठ्यक्रम के माध्यम से होती हे। इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षण की क्रियाओं को दिशा प्रदान करते हैं। इन तीनों घटकों के पारस्परिक अन्त:प्रक्रिया द्वारा बालक का विकास किया जाता है। शिक्षण में तीनों घटकों का विशेष महत्त्व होता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षा का महत्त्वपूर्ण साधन है, शिक्षक साध्य तथा छात्र साधक होता है। पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है—

(1) पाठ्यक्रम बालक के सम्पूर्ण विकास हेतु साधन प्रदान करता है, जिसकी सहायता से शिक्षण की क्रिया को सम्पादित किया जाता है।।

(2) पाठ्यक्रम को मानव जाति के अनुभवों को सम्मिलित रूप से स्पष्ट करके संस्कृतिक तथा सभ्यता का हस्तांतरण एवं विकास करना।

(3) पाठ्यक्रम को बालक में मित्रता, ईमानदारी, निष्कपटता, सहयोग सहनशीलता, सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का निर्माण करना।

(4) पाठ्यक्रम को बालक की चिन्तन, मनन तर्क तथा विवेक एवं निर्णय आदि सभी मानसिक शक्तियों का विकास करना।

(5) पाठ्यक्रम को बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित सभी आवश्यकताओं, मनोवृत्तियों तथा क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुसार नाना प्रकार की सर्जनात्मक तथा रचनात्मक शक्तियों का विकास करना।

(6) पाठ्यक्रम को सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों एवं कलाओं तथा धर्मों के आवश्यक ज्ञान द्वारा ऐसे गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना चाहिये जो प्रत्येक परिस्थिति में साधनपूर्ण तथा साहसपूर्ण बनकर नवीन मूलयों का निर्माण करना।

(7) पाठ्यक्रम को ज्ञान तथा खोज की सीमाओं को बढ़ाने के लिये अन्वेषकों का सृजन करना।

(8) पाठ्यक्रम को विषयों तथा क्रियाओं के बीच की खाई कों पाटकर बालक के सामने ऐसी क्रियाओं को प्रस्तुत करना जो उसके वर्तमान तथा भावी जीवन के लिये उपयोगी बनाना।

(9) पाठ्यक्रम को बालक में जनतंत्रीय भावना का विकास करना।

(10) पाठ्यक्रम शिक्षण क्रियाओं तथा शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्त:प्रक्रिया के स्वरूप निर्धारित करना।

पाठ्यक्रम के मूल तत्त्व
(Basic Elements of Curriculum)

शिक्षा की प्रक्रिया का सम्पादन शिक्षक द्वारा किया जाता है। शिक्षक अपनी क्रियाओं का नियोजन कक्षा शिक्षण के लिये करता है। उसके प्रमुख तीन तत्त्व होते हैं—उद्देश्य, पाठ्यवस्तु एवं शिक्षण विधियाँ। 'पाठयक्रम' विकास में पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों को महत्त्व दिया जाता है। पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों का नियोजन उद्देश्यों की दृष्टि से किया जाता है। एक पाठ्यवस्तु से कई उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं परन्तु अधिगम-अवसरों एवं परिस्थितियाँ उद्देश्यों के स्वरूप को सुनिश्चित करते हैं। विशिष्ट उद्देश्यों हेतु विशिष्ट अधिगम-परिस्थितियों का नियोजन किया जाता है। शिक्षण तथा अधिगम क्रियायें पाठ्यक्रम के ही प्रमुख तत्त्व माने जाते हैं। इस प्रकार पाठ्यक्रम के चार मूल तत्त्व माने जाते हैं—उद्देश्य, पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधियाँ तथा मूल्यांकन। इन तत्त्वों में गहन सम्बन्ध होता है।

1. उद्देश्य—पाठ्यवस्तु शिक्षण विधियों तथा परीक्षण का नियोजन उद्देश्यों की दृष्टि से किया जाता है। अधिगम-परिस्थितियों के स्वरूप से इन्हें प्राप्त करते हैं।

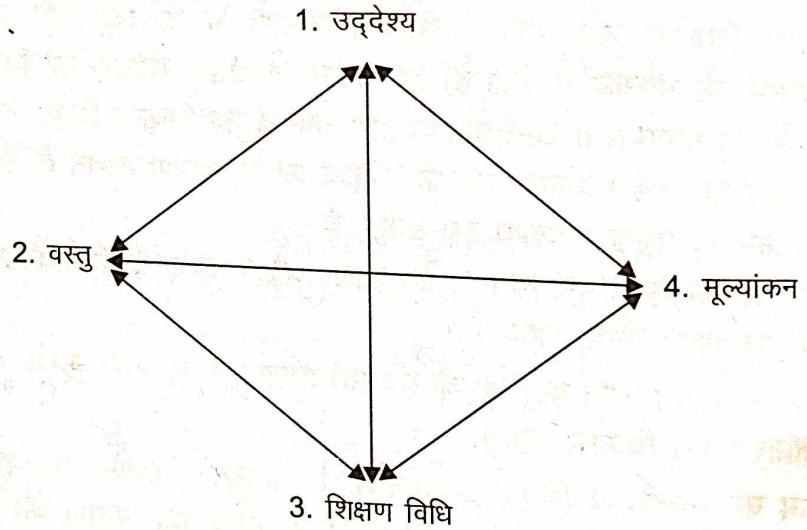

2. पाठ्यवस्तु—पाठ्यवस्तु का स्वरूप अधिक व्यापक होता है। अधिगम परिस्थितियाँ तथा परीक्षण परिस्थितियाँ उसके स्वरूप को सुनिश्चित करती है।

3. शिक्षण विधियाँ—उपयुक्त शब्द शिक्षण आव्यूह का चयन उद्देश्यों की प्राप्ति से किया जाता है। शिक्षण विधियों का सम्बन्ध पाठ्यवस्तु से होता है। शिक्षण आव्यूह अधिगम-परिस्थितियों को उत्पन्न करती है जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किये जाते हैं जो पाठ्यवस्तु के स्वरूप को सुनिश्चित करते हैं।

4. मूल्यांकन—परीक्षण द्वारा पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण विधियों की उपादेयता के सम्बन्धम में जानकारी होती है और पाठ्यक्रम के विकास के लिये दिशा भी मिलती है।

पाठ्यक्रम का शैक्षिक तत्वों से सम्बन्ध
(Relationship of Curriculum to Educational Elements)

पाठ्यक्रम का शैक्षिक तत्त्वों के गहन सम्बन्ध होता है। शिक्षा-प्रक्रिया के अन्तर्गत चार प्रमुख तत्व होते हैं—शिक्षण, अधिगम, पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक आयोजन। शिक्षण तथा अधिगम में सम्बन्ध होता है क्योंकि

शिक्षण क्रियाओं से अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं जिनमें छात्र अनुभव करता है जिससे उनमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जाता है। शिक्षण क्रियाओं का सम्पादन पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है, जिसका स्वरूप पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। विद्यालय में शैक्षिक आयोजन (Educational Organization) के अन्तर्गत शिक्षण अधिगम के अतिरिक्त अन्य पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का नियोजन कियाजाता है जिससे शैक्षिक परिस्थितियाँ आयोजित की जाती हैं इस प्रकार के चारों तत्त्वों के आपसी सम्बन्ध का विवेचन एवं प्रस्तुतीकरण 'हासफोर्ड' ने अपनी पुस्तक (Theory and Instruction) के अन्तर्गत किया है। इन्होंने शिक्षा के चार तत्वों के महत्व को दिया है।

(अ) अधिगम (छात्र) (ब) शिक्षण (शिक्षक) (स) पाठ्यक्रम तथा (द) शैक्षिक आयोजन

(अ) अधिगम वह प्रक्रिया है जो व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

(ब) शिक्षण वह प्रक्रिया है जो अधिगम में सुगमता प्रदान करती है।

(स) पाठ्यक्रम में विद्यालयों द्वारा नियोजन अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है।

(द) शैक्षिक आयोजन में समस्त शैक्षिक अनुभवों की क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जो विद्यालय में तथा विद्यालय से बाहर की जाती है।

इन चारों पक्षों की अन्त:प्रक्रिया में घटकों (Factors) का विवरण इस प्रकार है—

शिक्षा के चारों पक्षों में अन्त:प्रक्रिया का स्वरूप

(1) इसमें पाठ्यक्रम के उस पक्ष को शैक्षिक आयोजन में सम्मिलिजत किया जाता है जिसमें शिक्षक की आवश्यकता नहीं होती है।

(2) इसमें शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम तीनों के मध्य अन्त:प्रक्रिया होती है।

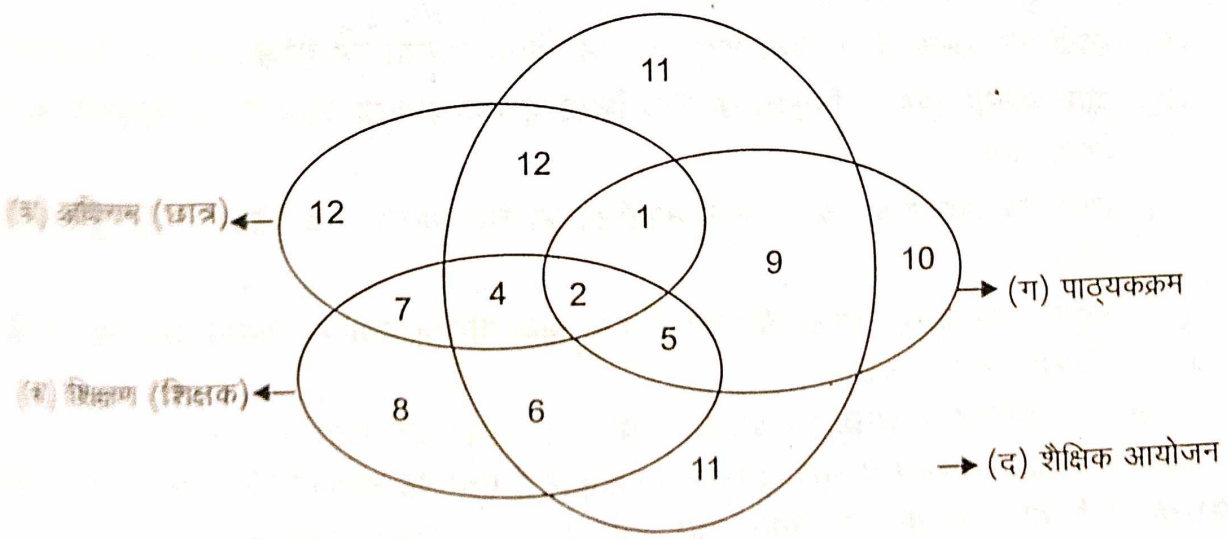

(3) छात्र शैक्षिक-आयोजन में बिना पाठ्यक्रम तथा शिक्षक के अन्त:प्रकिया करता है।

(4) छात्र तथा शिक्षक में पाठ्यक्रम के बिना शैक्षिक आयोजन से अन्त:प्रक्रिया होती है।

(5) शिक्षक तथा पाठ्यक्रम के मध्य शैक्षिक-आयोजन के अन्तर्गत अन्त:प्रक्रिया होती है।

(6) शिक्षक तथा शैक्षिक-आयोजन के मध्य बिना पाठ्यक्रम के अन्त:प्रक्रिया होती है।

(7) शिक्षक तथा छात्र के मध्य बिन पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक-आयोजन के अन्तर्गत अन्त:प्रकिया होती है।

(8) शिक्षक का व्यवहार बिना पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक-आयोजन के होता है।

(9) पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक-आयोजन की अन्त:प्रक्रिया जो छात्र तक नहीं पहुँचती है

(10) पाठ्यक्रम जिसका शैक्षिक-आयोजन में प्रयोग न किया जाये और न छात्रों तक पहुँच सके।

(11) शैक्षिक-आयोजन का वह कार्यक्रम जिसे प्रयुक्त न किया जा सके।

(12) छात्र का समस्त अधिगम शैक्षिक-आयोजन, शिक्षण तथा पाठ्यक्रम के द्वारा ही नहीं होता। इसमें छात्र का वह अधिगम सम्मिलित किया जाता है जो अन्य माध्यमों से होता है।

इस प्रकार पाठ्यक्रम तत्त्व की भूमिका शिक्षा परिस्थितियों के नियोजन के लिये अहम होती है।